10

असंख्यात प्रदेश जाके

असंख्यात प्रदेश जाके, ज्ञान दरस अनन्त ।
सुख अनन्त अनन्त वीरज, शुद्ध सिद्ध महन्त ।। रे जिय. ।।1 ।।

अमल अचलातुल अनाकुल, अमन अवच अदेह ।
अजर अमर अखय अभय प्रभु, रहित-विकलप नेह ।। रे जिय. ।।2 ।।

क्रोध मद बल लोभ न्यारो, बंध मोख विहीन ।
राग दोष विमोह नाहीं, चेतना गुणलीन ।। रे जिय. ।।3 ।।

वरण रस सुर गंध सपरस, नाहिं जामें होय ।
लिंग मारगना नहीं, गुणथान नाहीं कोय ।। रे जिय. ।।4 ।।

ज्ञान दर्शन चरनरूपी, भेद सो व्योहार ।
करम करना क्रिया निहचै, सो अभेद विचार ।। रे जिय. ।।5 ।।

आप जाने आप करके, आपमाहीं आप।
यही ब्योरा मिट गया तब, कहा पुन्यरु पाप ।। रे जिय. ।।6 ।।

है कहै है नहीं नाहीं, स्याद्वाद प्रमान ।
शुद्ध अनुभव समय 'द्यानत', करौ अमृतपान ।। रे जिय. ।।7 ।।

हे मन ! सिद्ध भगवान के असंख्यात प्रदेश हैं और उनमें अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत सुख और अनंत वीर्य प्रकट हो गये हैं, वे पुर्ण शुद्धता को प्राप्त महान आत्मा हैं ॥1॥

हे आत्मन्! सिद्ध भगवान मल से रहित हैं, चलायमान नहीं हैं, उपमा आदि से रहित हैं, आकुलता रहित हैं। उनका मन नहीं है, उनकी वाणी नहीं है, उनका शरीर नहीं है, वह जन्म – मरण से रहित अक्षय पद को प्राप्त हुए हैं। वे भय से रहित हैं और वे विकल्प और स्नेह, राग से भी रहित हो गए हैं ॥2॥

हे चेतन! सिद्ध भगवान क्रोध, मान, माया, लोभ से रहित हो गए हैं। वे बंध और मोक्ष से भी रहित हैं। उनके राग – द्वेष मोह नहीं है। वे अपनी आत्मा में लीन हो गए हैं ॥*॥

हे आत्मन्! सिद्ध भगवान के स्पर्श, रस, गंध, वर्ण नहीं है। उनमें लिंग मार्गणा, गुणस्थान आदि भी नहीं हैं ॥4॥

हे मन! सिद्ध भगवान के सम्यक्–दर्शन, सम्यक्–ज्ञान सम्यक्–चारित्र के भेद कहे गए हैं उन्हें व्यवहार से जानना। वहाँ पर न कर्म हैं, न क्रिया है ऐसा अभेद रूप से विचार करना ॥5॥

हे चेतन! सिद्ध भगवान स्वयं के द्वारा, स्वयं में ही, स्वयं को जानते हैं। उनके अंदर सारे विकल्प समाप्त हो गए हैं तो पुण्य और पाप की तो बात ही क्या? ॥6॥

कवि द्यानतरायजी कहते हैं कि हे चेतन! हमने जितना भी वर्णन किया है वह सब स्याद्वाद शैली से समझना। अपनी आत्मा के अनुभव के समय कोई विकल्प नहीं होता; इस तरह अमृत पान करना ॥7॥